• बाल कविता...

मीठे बोल...

मीठा होता खस्ता खाजा
मीठा होता हलुआ ताजा,
मीठे होते गट्टे गोल
सबसे मीठे, मीठे बोल।
मीठे होते आम निराले
मीठे होते जामुन काले,
मीठे होते गन्ने गोल
सबसे मीठे, मीठे बोल।
मीठा होता दाख छुहारा
मीठा होता शक्कर पारा,
मीठा होता रस का घोल
सबसे मीठे, मीठे बोल।
मीठी होती पुआ सुहारी
मीठी होती कुल्फी न्यारी,
मीठे रसगुल्ले अनमोल
सबसे मीठे, मीठे बोल।

■ सोहन लाल द्विवेदी

अंधियारे से डरना कैसा...

अम्मा बोली-सूरज बेटे,
जल्दी से उठ जाओ।
धरती के सब लोग सो रहे,
जाकर उन्हें उठाओ।
मुर्गे थककर हार गये हैं,
कब से चिल्ला-चिल्ला।
निकल घोंसलों से गौरैयां,
मचा रहीं हैं हल्ला।
तारों ने मुंह फेर लिया है,
तुम मुंह धोकर जाओ।
पूरब के पर्वत की चाहत,
तुम्हें गोद में ले लें।
सागर की लहरों की इच्छा,
साथ तुम्हारे खेलें।
शीतल पवन कर रहा कत्थक,
धूप गीत तुम गाओ।
सूरज मुखी कह रहा भैया,
अब जल्दी से आएं।
देख आपका सुंदर मुखड़ा,
हम भी तो खिल जायें।
जाओ बेटे जल्दी से जग,
के दुख दर्द मिटाओ।
नौ दो ग्यारह हुआ अंधेरा,
कब से डरकर भागा।
रहा रात भर राजा जग का,
सुबह राज पद त्यागा।
समर क्षेत्र में जाकर दिन पर,
अब तुम रंग जमाओ।
अंधियारे से डरना कैसा,
क्यों उससे घबराना?
हुआ उजाला तो निश्चित ही,
है उसका हट जाना।
सोलह घोड़ों के रथ चढ़कर,
निर्भय हो कर जाओ।

■ प्रभुदयाल श्रीवास्तव

• जानकारी...

किसके लिए बना था पिज्जा

पिज्जा का नाम देश के अधिकांश बच्चे जानते हैं। आज देशभर में कई अलग-अलग ब्रांड्स के पिज्जा स्टोर खुल चुके हैं। लेकिन पिज्जा लवर से लेकर आम आदमी भी पिज्जा के इतिहास के बारे में शायद ही जानते होंगे। आज हम आपको बताएंगे कि पिज्जा की सबसे पहले शुरूआत कब हुई थी और ये भारत में कब पहुंचा।

अधिकांश घरों के बच्चों को पिज्जा पसंद होता है। ऑनलाइन ऑर्डर लेकर स्टोर पर बच्चे-बड़े पिज्जा खाना पसंद करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि पिज्जा को बनाने की शुरुआत कहां से हुई थी? बता दें कि पिज्जा की शुरुआत किसानों के भोजन के रूप में इटली में हुई थी। उस दौरान इसकी रोटी (पिज्जा बेस) भट्टी में तैयार की जाती थी। इस भट्टी में ईंधन के रूप में ज्वालामुखी से लाए गए लावा का उपयोग किया जाता था। हालांकि उस वक्त लोग इसे साधारण तरीके से ही खाते थे।

बता दें कि टॉपिंग से भरपूर रंगीन पिज्जा सबसे पहले इटली की प्रथम महारानी मार्गेरीटा के लिए एक रेस्टोरेंट में तैयार किया गया था। दरअसल रेस्टोरेंट के मालिक ने पिज्जा को खास बनाने के लिए इस पर इस तरह की टॉपिंग की, जिससे इस पर इटेलियन फ्लैग को देखा जा सकता था। जिसमें टमाटर, मोजेरिला चीज और बेसिल लगाए गए थे। उस समय यूरोप में टमाटर प्रचलन में नहीं थे, इसलिए अमेरिका से टमाटर मंगवाए गए थे। इस टॉपिंग वाले पिज्जा को मार्गेरीटा नाम दिया गया था। इसके बाद महल ही नहीं बल्कि कई जगहों पर इसकी डिमांड तेजी से बढ़ी थी।

जानकारी के मुताबिक दुनिया का सबसे पहला पिज्जेरिया साल 1830 में पोर्ट एल्बा में खुला था। जिसमें पिज्जा तैयार करने के लिए ओवन का इस्तेमाल किया गया था। इसके बाद धीरे-धीरे पिज्जा इटली से निकल कर दूसरे देशों में भी पहुंचा था। इतिहास के मुताबिक साल 1895 तक इसे अमेरीका में पसंद किया जाने लगा था। ऐसे में गेन्नैरो लोम्बार्डी ने साल 1905 में न्यूयार्क में अमेरिका का पहला पिज्जेरिया खोला, जो आज भी मौजूद है।

बता दें कि पिज्जा का सफर यूनान, इटली, अमेरिका आदि देशों से होते हुए 1996 में इंडिया पहुंचा था। सबसे पहले पिज्जा हट कंपनी ने 18 जून को भारत में अपना पहला आउटलेट खोला था। कंपनी ने इंडिया में अपना पहला आउटलेट बेंगलुरु में खोला था।

• तेनालीराम

दूध न पीने वाली बिल्ली

एक बार महाराज कृष्णदेव राय ने सुना कि उनके नगर में चूहों ने आतंक फैला रखा है। चूहों से छुटकारा पाने के लिए महाराज ने एक हजार बिल्लियां पालने का निर्णय लिया। महाराज का आदेश होते ही एक हजार बिल्लियां मंगवाई गयी। उन बिल्लियों को नगर के लोगों में बांटा जाना था। जिसे बिल्ली दी गयी उसे साथ में एक गाय भी दी गयी ताकि उसका दूध पिलाकर बिल्ली को पाला जा सके।

चूहों से सभी लोग परेशान थे, अतः जब बिल्लियां बंट रही थी तो लोगों की लंबी-लंबी कतारें लग गयी थीं। इस अवसर पर तेनालीरामन भी एक कतार में खड़ा हो गया। जब उसकी बारी आयी तो उसे भी एक बिल्ली और साथ में एक गाय दे दी गई। बिल्ली को घर ले जाकर उसने गरमागरम एक कटोरा दूध उसे पीने को दिया। बिल्ली भूखी थी। बेचारी ने जैसे ही कटोरे में मुंह मारा तो गर्म दूध से उसका मुहं बुरी तरह जल गया। इसके बाद बिल्ली के आगे जब दूध रखा जाता, चाहे वह ठंडा ही क्यों न हो, बिल्ली वहां से भाग खड़ी होती। गाय का सारा दूध अब तेनालीराम व उसके परिवार के अन्य सदस्य ही पी जाते। 3 माह बाद महाराज ने बिल्लियों की जांच करवाई। गाय का दूध पी-पीकर सभी की बिल्लियां मोटी-तगड़ी हो गयी थी, परन्तु तेनालीराम की बिल्ली सूखकर कांटा हो चुकी थी। वह सब बिल्लियों के बीच में अलग पहचानी जा रही थी। महाराज ने जब तेनालीराम की बिल्ली की हालत देखी तब वे क्रोधित हो उठे। उन्होंने तुरंत ही तेनालीराम को हाजिर करने का आदेश दिया। तेनालीराम के आने पर वे गरजते हुए बोले, 'तुमने बिल्ली का यह क्या हाल बना दिया है? क्या तुम इसे दूध नहीं पिलाते?'

'महाराज! मै तो रोज इसके सामने दूध भरा कटोरा रखता हूं, अब यह दूध पीती ही नहीं है तो इसमें मेरा क्या दोष है?' महाराज को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह अविश्वास भरे स्वर में बोले, 'क्यों झूठ बोल रहे हो? बिल्ली दूध नहीं पीती? मै तुम्हारी झूठी बातों में आने वाला नहीं।'

'परन्तु महाराज यही सच है। यह बिल्ली दूध नहीं पीती।' महाराज झल्लाकर बोले, 'ठीक है। यदि तुम्हारी बात सच निकली तो तुम्हे सौ स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी। अन्यथा सौ कोड़ों की सजा मिलेगी।' मुझे मंजूर है! तेनालीराम शांत भाव से बोला। तुरंत ही महाराज ने एक सेवक से दूध का भरा कटोरा लाने का आदेश दिया। सेवक जल्द ही दूध से भरा कटोरा ले आया। अब महाराज ने तेनालीराम की बिल्ली को हाथों में उठाया और उसका सिर सहलाते हुए दूध के कटोरे के पास छोडते हुए कहा, 'बिल्ली रानी दूध पियो!'

बिल्ली ने जैसे ही कटोरे में रखा दूध देखा, वह म्याऊं-म्याऊं करती हुई वहां से भाग निकली। 'महाराज, अब तो आपको विश्वास हो गया होगा कि मेरी बिल्ली दूध नहीं पीती। लाइए अब मुझे सौ स्वर्ण मुद्राएं दीजिये।' तेनालीराम ने कहा। 'वह तो ठीक है, लेकिन मैं एक बार उस बिल्ली को ध्यान से देखना चाहता हूं।'

यह कहकर महाराज ने एक कोने में छिप गयी बिल्ली को पकड़कर लाने का आदेश दिया। बिल्ली को अच्छी तरह देखने पर उन्होंने पाया की उसके मुंह में जले का एक बड़ा सा निशान है। वह उसी क्षण समझ गए कि बिल्ली मुंह जल जाने के डर से दूध पीने से कतराती है। वे तेनालीराम की तरफ देखते हुए बोले। 'अरे निर्दयी! तुमने इस बिल्ली को जानबूझकर गर्म दूध पिलाया ताकि यह दूध न पी सके। ऐसा करते हुए हुए तुम्हे शर्म नहीं आयी।'

तेनालीराम ने उत्तर दिया, 'महाराज!, यह देखना तो राजा का कर्तव्य है कि उसके राज्य में बिल्लियों से पहले मनुष्य के बच्चो को दूध मिलना चाहिए।' इस बात पर महाराज हंस दिए। उन्होंने तेनालीराम को तुरंत ही एक हजार स्वर्ण मुद्राएं भेंट की और बोले, 'तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु मैं आशा करता हूं कि भविष्य में तुम बेजुबान पशुओं के साथ दुष्टता नहीं करोगे।'

चूहों से सभी लोग परेशान थे, अतः जब बिल्लियां बंट रही थी तो लोगों की लंबी-लंबी कतारें लग गयी थीं। इस अवसर पर तेनालीरामन भी एक कतार में खड़ा हो गया।

जब उसकी बारी आयी तो उसे भी एक बिल्ली और साथ में एक गाय दे दी गई। बिल्ली को घर ले जाकर उसने गरमागरम एक कटोरा दूध उसे पीने को दिया। बिल्ली भूखी थी। बेचारी ने जैसे ही कटोरे में मुंह मारा तो गर्म दूध से उसका मुहं बुरी तरह जल गया...

• रोचक...

अंतरिक्ष की सैर

रूसी कॉस्मोनॉट ओलेग कोनोनेंको ने अंतरिक्ष में सबसे ज्यादा समय तक रहने का विश्व रिकॉर्ड तोड़ा है। उन्होंने 878 से अधिक दिन में स्पेस में रह कर नया रिकॉर्ड अपने नाम किया है। कोनोनेंको ने रूस के ही अंतरिक्ष यात्री गेन्नेडी पडल्का का रिकॉर्ड तोड़ा है गेन्नेडी पडल्का ने कुल 878 दिन, 11 घंटे, 29 मिनट और 48 सेकंड का समय अंतरिक्ष में बिताया था। 59 वर्षीय कोनोनेंको अभी 5 जून तक स्पेस में ही रहेंगे। ऐसे में स्पेस में रहते हुए उन्हें हजार दिन पूरे हो जाएंगे। 2021 में एमेजॉन के सीईओ जेफ बेजोस ने अंतरिक्ष की यात्रा की थी। उनके साथ उनके भाई मार्क बेजोस और 82 साल की महिला पाइलट वैली फंक और एक 18 साल का युवक भी अंतरिक्ष यात्रा पर गया था। जिसका नाम ओलिवर डेमन है।

• धनिया पाउडर...

धनिया पाउडर किसी भी व्यंजन में स्वाद बढ़ाने का काम करता है। आजकल नकली धनिया पाउडर को पशुओं का मल, भूसा और यहां तक कि खरपतवार को भी बारीक पीसकर बनाया जा रहा है। इतना ही नहीं, कई लोग आटे की भुसी को भी हरा रंगकर मिलाकर देते हैं। इसकी पहचान आसान है। धनिया की खूशबू तेज होती है। यदि इसमें से कोई खूशबू न आये या कुछ जंगली पौधों की खुशबू आये तो समझ जायें कि धनिया पाउडर में मिलावट है।